

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चाशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে পঞ্চাশং দশকম্ ॥

রৎসাসুররধরণনম্, বকাসুররধরণনং চ

তরলমধুকৃদ্বন্দে বৃন্দারনেহথ মনোহরে
পশুপশিশুভিঃ সাকং রৎসানুপালনলোলুপঃ।
হলধরসখো দেব শ্রীমন্ রিচেরিথ ধারযন্
গরলমুরলীরেত্রং নেত্রাভিরামতনুদ্যুতিঃ ॥ 50.1 ॥

রিহিতজগতীরক্ষং লক্ষ্মীকরাধ্বজলালিতং
দদতি চরণদ্বন্দ্বং বৃন্দারনে ত্রয়ি পারনে।
কিমির ন বভৌ সম্পৎসম্পূরিতং তরুরল্লরী -
সলিলধরণীগোত্রক্ষেত্রাদিকং কমলাপতে ॥ 50.2 ॥

রিলসদুলপে কান্তারান্তে সমীরণশীতলে
রিপুলযমুনাতীরে গোরধনাচলমূর্ধসু।
ললিতমুরলীনাদঃ সঞ্চারণন্ খলু রাৎসকং
ক্ৰচন দিরসে দৈত্যং রৎসাকৃতিং ত্রমুদৈক্ষথাঃ ॥ 50.3 ॥

রভসরিলসৎপুচ্ছং রিচ্ছায়তোহস্য রিলোকযন্
কিমপি রলিতঙ্কঙ্কং রঙ্কপ্রতীক্ষমুদীক্ষিতম্।
তমথ চরণে বিভ্রদ্বিভ্রামযন্ মুহুরুচ্চকৈঃ
কুহচন মহারূক্ষে চিক্ষেপিথ ক্ষতজীরিতম্ ॥ 50.4 ॥

নিপততি মহাদৈত্যে জাত্যা দুরাত্মনি তৎক্ষণং
নিপতনজরক্ষুণ্ণক্ষোণীরুহক্ষতকাননে।

दिरि परिमिलद्बुन्दा बुन्दारकाः कुसुमोत्करैः
शिरसि भरतो हर्षाद्द्वर्षन्ति नाम तदा हरे ॥ 50.5 ॥

सुरभिलतमा मूर्धन्युर्ध्वं कुतः कुसुमारली
निपतति तरेत्युक्तो बालैः सहेलमुदैरयः।
वाटिति दनुजक्षेपेणोर्ध्वं गतस्तरुमगुलां
कुसुमनिकरः सोहयं नूनं समेति शनैरिति ॥ 50.6 ॥

क्वचन दिरसे डूयो डूयस्तरे परुषातपे
तपनतनयापाथः पातुं गता भरदादयः।
चलितगरुतं प्रेक्षामासुर्वकं खलु रिस्यूतं
क्षितिधरगरुच्छेदे कैलासशैलमिरापरम् ॥ 50.7 ॥

पिबति सलिलं गोपब्राते भरन्तमभिक्रतः
स किल निगिलन्नग्निप्रथ्यं पुनर्द्रुतमुद्गमन्।
दलयितुमगां त्रोट्याः कोट्या तदाहहशु भरान् रिभो
खलजनभिदाचुक्षुश्चक्षु प्रगृह्य ददार तम् ॥ 50.8 ॥

सपदि सहजां सन्द्रष्टुं रा मृतां खलु पूतना -
मनुजमघमप्यग्रे गत्रा प्रतीक्षितुमेर रा।
शमननिलयं याते तस्मिन् वके सुमनोगणे
किरति सुमनोर्बुन्दं बुन्दारनां गृहमैयथाः ॥ 50.9 ॥

ललितमुरलीनादं दुरान्निशम्य रधुजनै -
स्त्रुरितमुपगम्यारदारुचमोदमुदीक्षितः।
जनितजननीनन्दानन्दः समीरणमन्दिर -
प्रथितरसते शौरे दुरीकुरुष्वर ममामयान् ॥ 50.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥